RNI No - RAJHIN/2003/9899 Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 September 2018 Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd September 2018

मासिक पत्रिका

# अजायब ✵ बानी

वर्ष : सोलहवां | अंक : पाँचवा | सितम्बर–2018

7 परमात्मा सब सुखों का दाता है (सतसंग)

28 परमात्मा हमसे दूर नहीं (अमृत वेला)

32 निन्दा (अनमोल वचन)

34 धन्य अजायब (अजायब बानी एप्लीकेशन की जानकारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे, नारायणा,
नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039
जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 मूल्य ₹ 5/–
e-mail : dhanajaibs@gmail.com 198 Website : www.ajaibbani.org

# मुद्दत होई यार विछुड़या पा फेरा

मुद्दत होई यार विछुड़याँ पा फेरा,
रूल गऐ विच संसार विछुड़याँ पा फेरा,

1. होई कोंण खुनामी, जो तुं मुड़या इ ना, (2)
तरले ओसियां पाऐ, तुं ते सुणया इ ना,
आजा आजा आजा (2), मुड़या पा फेरा,
मुद्दत होई यार .....

2. लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे, (2)
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता (2), बझदा ना जेरा,
मुद्दत होई यार .....

3. मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है, (2)
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य (2) , जे धरजां मैं जेरा,
मुद्दत होई यार .....

4. हिम्मतां टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया, (2)
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे (2), पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार .....

5. रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा, (2)
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके (2), बैह जा इक वेरां,
मुद्दत होई यार .....

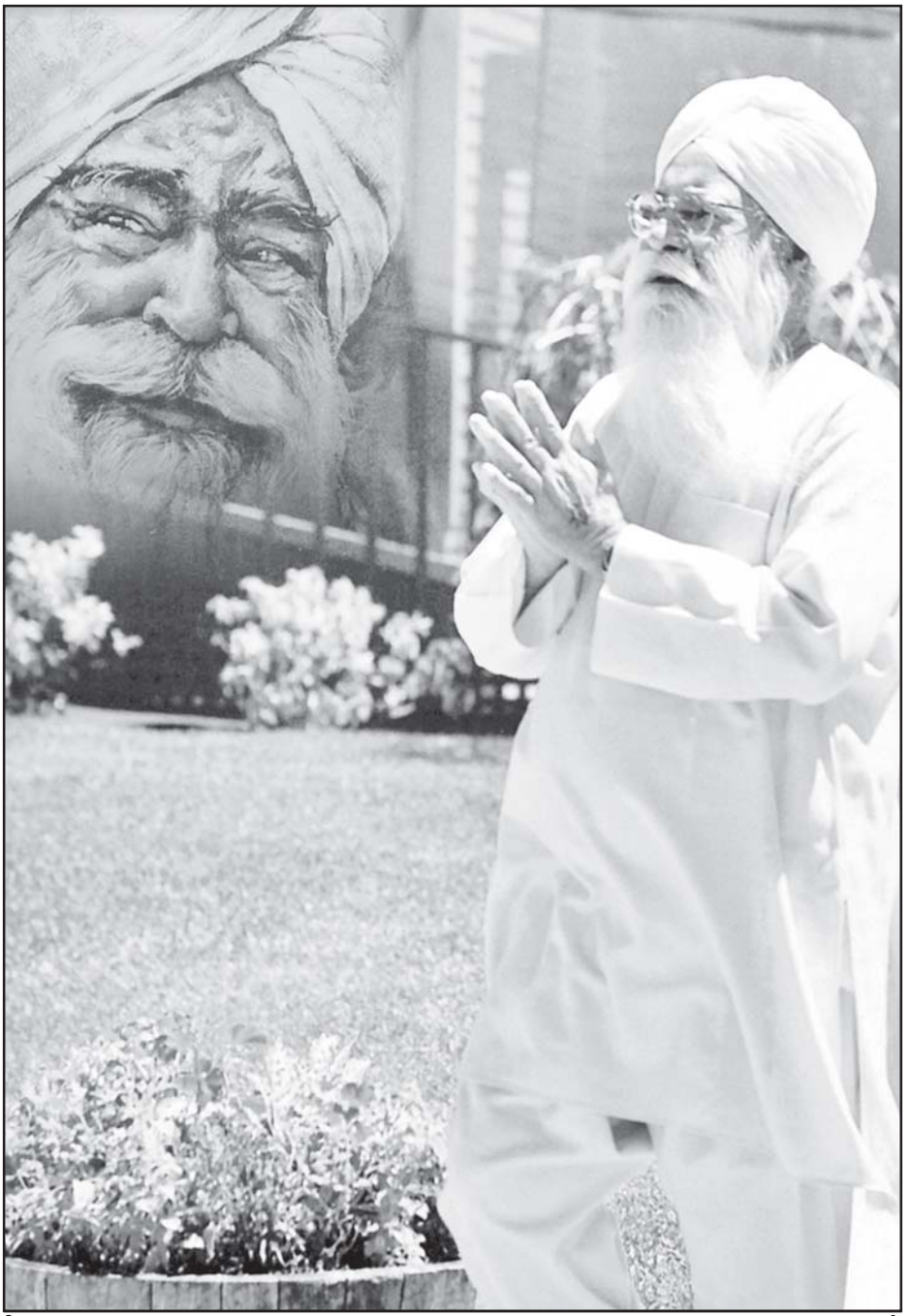

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# परमात्मा सब सुखों का दाता है

गुरु तेग बहादुर साहब की बानी DVD-301 16 पी.एस.राजस्थान आश्रम

मैं उस कुलमालिक परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया, अपनी दया की। यह उन्हीं की मेहर है जो आज हम इकट्ठे होकर उनका यश कर रहे हैं उनकी याद में बैठे हैं।

सबसे पहले समझने वाली बात यह है कि सन्त-महात्मा इस संसार में न किसी की पहले बनी कौम-समाज को तोड़ने के लिए आते हैं और न ही कोई नई कौम या समाज बनाने के लिए आते हैं। हम लोग ही उन महात्मा मालिक के प्यारों के जाने के बाद उनके नाम पर कोई समाज बनाकर बैठ जाते हैं या कोई फिरका बना लेते हैं; एक-दूसरे के साथ लड़ते-झगड़ते हैं।

कोई भी महात्मा किसी को अपनी देह के साथ जोड़ने के लिए नहीं आता। जो लोग सन्तों की देह के साथ बंध जाते हैं वे सच्चाई को नहीं समझते। सन्त शब्द में से आते हैं शब्द का प्रचार करते हैं और वे उसी शब्द के बीच जाकर समा जाते हैं लेकिन जो लोग सन्तों की देह के साथ बंध जाते हैं वे उनसे क्या फायदा उठाएंगे, देह, देह का क्या फायदा कर सकती है? कबीर साहब कहते हैं:

*गुरु करया है देह का सतगुरु चीन्हा नाहे।*
*लख चौरासी धार में फिर फिर गोता खाहे।।*

सन्त हमें प्यार से बताते हैं कि हमारी आत्मा सेविका है और शब्द गुरु है कोई भाग्यशाली ही महात्मा से मिलाप कर लेता है।

*शब्द गुरु सुरत धुन चेला।*

किसी ने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''आप भी कोई समाज बनाएं उसका नाम रखें।'' महाराज जी ने कहा, ''प्यारेयो! पहले ही बहुत कुएं खुदे हुए हैं नया कुआँ खोदने की क्या जरूरत है? पहले ही बहुत समाज बने हुए हैं लोग उन समाजों में जकड़े हुए हैं, परमात्मा की याद भूलकर समाज बनाने में लगे हुए हैं।''

आपको पता है कि समाजों में पक्षपात है। कोई कहता है कि हमारा समाज अच्छा है हमारा भक्ति करने का तरीका ठीक है, दूसरे का तरीका ठीक नहीं हम आपस में ही लड़ते-झगड़ते हैं। सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं कि देखो प्यारेयो! जब वह परमात्मा एक है उसके मिलने का साधन-तरीका भी एक है फिर लड़ाई-झगड़ा किस बात का है? यह सब नासमझी है।

आज आपके आगे गुरु तेग बहादुर साहब जी की बानी रखी जा रही है। हम सिक्ख लोग गुरु ग्रंथ साहब को पढ़ लेते हैं बाद में भोग डालते हैं, हम सब पढ़ते और सुनते हैं लेकिन बानी सिर्फ पढ़ने या सुनने के लिए नहीं। बानी समझने और विचारने के लिए है कि बानी हमें क्या कहती है?

सब सन्तों की बानी हमें यही कहती है कि परमात्मा आपके अंदर है बाहर नहीं, परमात्मा न बाहर से मिला है न मिलेगा। गुरु तेगबहादुर साहब की सारी ही बानी वैराग्यमयी है। आपने बहुत वैराग्य में आकर भजन-अभ्यास किया था। गुरु तेग बहादुर साहब ने एक गुफा बनाकर जो तप-अभ्यास किया वह एक मिसाल था।

हम बाद में जो श्लोक पढ़ते हैं वह बहुत वैराग्य भरा है। इस श्लोक को पढ़ने से हमारे अंदर नाशवान संसार को, माया के झूठे पदार्थों को छोड़ने का उत्साह पैदा होता है। मन के अंदर वैराग्य

पैदा होता है। गुरु साहब इस श्लोक में नाशवान संसार से निकलने का साधन व तरीका भी बताते हैं, एक-एक श्लोक विचारने वाला है।

सन्त-महात्माओं की बानी अनुभवी होती है। सन्त अपने तजुर्बे में आई बात ही ब्यान करते हैं। एक आदमी ने भौगोलिक विद्या पढ़ी है वह आदमी हर शहर, हर मुल्क का नक्शा सामने रखकर फौरन बता देगा कि अमेरिका यहाँ है, रशिया यहाँ है, यूरोपियन और कोलम्बियन देश यहाँ हैं। उस आदमी को सिर्फ भौगोलिक ज्ञान है अगर उससे पूछें कि तू कभी वहाँ गया है, तूने ये देश देखे हैं? तो वह यही कहेगा कि मैंने पढ़े हैं। दूसरा आदमी जिसने ये देश देखे हैं, दोनों में जमीन-आसमान का फर्क है। सच्चा कौन है? वह जिसने सारे मुल्क देखे हैं। सन्त अपनी आँखों से जो देखते हैं वही ब्यान करते हैं।

*सन्तन की सुन साची साखी, जो बोलण सो पेखन आखी।*

**गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीन।।**
**कहु नानक हरि भजु मना जिहि बिधि जल कौ मीन।।**

गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं, ''परमात्मा ने हमें इंसान का जामा एक तोहफा एक मौका दिया है। हम जो काम पशु-पक्षियों के जामें में नहीं कर सकते हम वह काम इंसान के जामें में कर सकते हैं, वह काम परमात्मा की भक्ति है। अगर इंसान का तन पाकर परमात्मा की भक्ति नहीं की तो हमारा यह तन किसी भी काम का नहीं।'' आपने मछली की मिसाल दी है कि हमने इस तरह की भक्ति करनी है जिस तरह मछली का पानी के साथ प्यार है, मछली को पानी में से निकालें तो वह तड़पकर मर जाती है।

सच्चाई तो यह है कि जब मछली को जाल डालकर पकड़ लेते हैं जो उसका कीमा-कीमा करके खाते हैं मछली उनके पेट में जाती

है वहाँ भी पानी माँगती है, जो मछली खाते हैं उन्हें प्यास लगती है। इस तरह सिमरन करें परमात्मा की भक्ति करें परमात्मा के साथ लिव लगाएं जिस तरह मछली का पानी के साथ प्यार है। उठते-बैठते, चलते-फिरते आपका ख्याल परमात्मा की तरफ हो।

**बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदास।**
**कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास।।**

आप प्यार से कहते हैं, ''क्यों शराबों-कबाबों, विषय-विकारों में फँसकर आप अपने आपको भूले बैठे हैं अगर आप परमात्मा को याद करें तो क्यों यम आकर आपके गले में फाँसी डालें; क्यों पकड़कर धर्मराज के पास लेकर जाएं?''

**तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति।**
**कहु नानक हरि भज मना अउध जातु है बीति।।**

आप कहते हैं, ''बचपन खेलकूद में ही चला गया, जवानी ऐश करते हुए चली गई अब बुढ़ापा आ गया है, आप इसे भी बर्बाद कर रहे हैं।'' मेरा जातिय तजुर्बा है कि मेरे पास बहुत से बूढ़े-बुढ़ियां आ जाते हैं अगर उनके बच्चे उन्हें भजन करने के लिए कहते हैं तो वे बुरा मनाते हैं। मैं भी उनसे कहता हूँ कि आप भजन करें आपके भजन का समय है तो वे बुरा मानते हैं।

मैं गंगानगर गया वहाँ एक 84 साल की बूढ़ी थी, वह सारा परिवार सतसंगियों का था। संगत आए चली जाए। वह बूढ़ी अपने बच्चों की शिकायत लेकर मेरे पास आकर बैठ गई। वह एटम बम की तरह भरी हुई थी कि प्रेमी एक तरफ हों तो मैं बाबा जी से बात करूं। उसके बच्चों ने मुझसे कहा कि आप हमारी माता की भी बात सुनें। मैंने उससे कहा, ''हाँ बता!'' उस बूढ़ी औरत ने कहा, ''मैंने इन बच्चों को पैदा किया है, इन्हें पाला-पोसा है अब ये बच्चे मुझसे कहते हैं कि तू भजन कर, अब आप ही बताएं कि मैं सफेद बालों वाली भजन करूं?'' अब आप सोचकर देखें! बच्चे, बूढ़ों को और क्या कहें? यह हालत है।

**बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आन।**
**कहु नानक नर बाबरे किउ न भजै भगवान।।**

गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं, ''बूढ़ा हो गया, काल झपट्टा मारने के लिए बाज की तरह तैयार बैठा है अब तो परमात्मा की तरफ ख्याल को लगा ले।''

**धन दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि।**
**इन मैं कछु संगी नही नानक साची जानि।।**

गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं, ''धन, स्त्री, पति, पुत्र जिन्हें तू अपना-अपना कहता है इनमें से कोई भी तेरा संगी-साथी नहीं, किसी ने भी तेरे साथ नहीं जाना।''

*बिन नामें को संग न साथी।*

नाम के बिना तेरा कोई संगी-साथी नहीं, किसी ने भी तेरी मदद नहीं करनी और न कोई कर ही सकता है।

**पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ।**
**कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथ।।**

अब गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं, ''जप-तप, पूजा-पाठ से आपके पाप दूर नहीं होते। पापों को दूर करने की एक ही दवाई नाम है। परमात्मा गरीब से गरीब को भी गले लगाता है। यह नहीं की अमीर ही भक्ति कर सकते हैं गरीब भक्ति नहीं कर सकते। औरत ही परमात्मा से मिल सकती है मर्द नहीं मिल सकते। बूढ़े मिल सकते हैं बच्चे नहीं मिल सकते। परमात्मा का दरवाजा हर एक के लिए खुला है। परमात्मा न किसी मंदिर में सोया हुआ है न पहाड़ों में है और न ही समुंद्र की तह में बैठा हुआ है परमात्मा तो तेरे शरीर के अंदर तेरे साथ ही है। परमात्मा जहाँ है हम उसे वहाँ ढूंढेंगे तो ही वह मिलेगा।''

**तनु धनु जिह तो कउ दीओ ता सिउ नेहु न कीन।**
**कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन।।**

**गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं, ''परमात्मा ने तुझे सुंदर तन दिया है चार दिन आराम करने के लिए धन दिया है। परमात्मा की**

**तरफ लगने के लिए मन दिया है, नाम जपने के लिए जीभ दी है। परमात्मा ने तुझे इतनी नियामतें दी हैं फिर भी तू पागलों की तरह फिरता है, क्यों परमात्मा के साथ नहीं जुड़ता, नाम नहीं जपता?''**

**तनु धनु सँपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम।**
**कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न राम ।।**

गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं, ''परमात्मा ने तुझे अच्छे मकान अच्छी संपत्ति दी है। परमात्मा ने तुझसे क्या छिपाया है? तू इतनी वस्तुएं पाकर भी परमात्मा को याद नहीं करता भूला बैठा है।''

***सब कुछ अपना एक राम पराया।***

**सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ।**
**कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ।।**

न सुख बादशाहियां प्राप्त करके है न सुख गरीबी धारण करके है। जिसके साथ मन है वह कैसे सुखी हो सकता है? मैं बताया करता हूँ कि मुझे अपनी जिंदगी में एक बादशाह से लेकर झोपड़ी वाले से भी मिलने का मौका मिलता है। मैंने न तो बादशाह को सुखी देखा है गरीब बेचारे को तो सुखी देखना ही क्या है? बड़े सिर के बड़े दुख हैं, हुकूमत भी काँटों की सेज होती है।

अब आप प्यार से समझाते हैं कि सारे सुख परमात्मा के नाम में हैं। जो खुशकिस्मत लोग सन्तों की बताई युक्ति के मुताबिक अंदर जाकर शब्द के साथ जुड़ जाते हैं उनके मन को सुख-शान्ति आ जाती है। जिनके मन के अंदर रोज शराबों-कबाबों, विषय-विकारों और मैं-मेरी के ख्याल उठ रहे हैं क्या वे सुखी हैं? जिनके अंदर ईर्ष्या है क्या वे सुखी हैं? परमात्मा के भक्त ही सुखी हैं। **परमात्मा सब सुखों का दाता है।**

*कोई तो तन मन दुखी कोई नित उदास ।*
*एक एक दुख सबन को सुखी सन्त का दास।।*

**जिह सिमरत गति पाईऐ तिहि भजु रे तै मीत।**
**कहु नानक सुन रे मना अउध घटत है नीत।।**

आप कहते हैं, ''जो दिन आज चला गया वह दिन जिंदगी में फिर नहीं आएगा, दरिया से बहा हुआ पानी वापिस नहीं आता। परमात्मा की भक्ति कर लेने में ही फायदा है, यह तो मौका है।''

*लख चौरासी जून सवाई, मानस को प्रभ दी वडयाई।*
*इस पौड़ी ते जो नर चूके, सो आए जाए दुख पाएंदा।।*

गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं, ''जिंदगी सदा नहीं। पता नहीं काल ने किस समय आकर घंटी बजा देनी है! पता नहीं कब एक्सीडेंट हो जाना है! पता नहीं कब साँस की गति-विधि रूक जानी है! पता नहीं सोते हुए चले जाना है या जागते हुए चले जाना है! काल घर या परदेस में किसी का लिहाज नहीं करता।'' सन्त-महात्मा कहते हैं कि वही स्याना है जो इस इंसानी जामें की कद्र करके भक्ति कर लेगा।

**पाँच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान।**
**जिह से उपजिओ नानका लीन ताहि मैं मान।।**

अब गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं, ''हे चतुर! तेरा तन पाँच तत्वों-हवा, पानी, मिट्टी, अग्नि, आकाश से रचा हुआ है। जब मौत आती है पानी पानी में मिल जाता है, मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है, अग्नि अग्नि में मिल जाती है, आकाश आकाश में मिल जाता है। वही अच्छा है जो इस जामें में भजन कर लेगा।''

**घटि घटि मैं हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि।**
**कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि।।**

गुरु साहब प्यार से कहते हैं जिस तरह मल्लाह दरिया के किनारे पर खड़ा होकर होका देता है कि जिसने पार जाना है वह मेरे बेड़े में सवार हो जाए। जो उस बेड़े में सवार हो जाते हैं वे अपनी मंजिल पर सुरक्षित पहुँच जाते हैं, जो सोचते रहते हैं वे किनारे पर ही बैठे रह जाते हैं। इसी तरह चाहे कोई सन्त यूरोप, हिन्दुस्तान या फारस के देशों में हुआ है। चाहे आज से पाँच सौ साल पहले हुआ है या पाँच हजार साल पहले हुआ है। सब महात्मा यही पुकारते हुए चले गए कि हम जिस परमात्मा से मिलना चाहते हैं वह न पत्थरों में है न पानी में है और न ही वेद-शास्त्र पढ़कर मिल सकता है। कहीं दिल में ख्याल हो कि हम उसे पढ़-पढ़ाई से प्राप्त कर लेंगे। कबीर साहब कहते हैंः

*दिन स्यों रैन वेद नहीं शास्त्र यहाँ वसे निरंकारा।*
*कहे कबीर नर तिसे ध्याओ बाबरया संसारा।।*

परमात्मा उस जगह बसता है जहाँ दिन नहीं रात नहीं मौत नहीं पैदाईश नहीं, जहाँ कोई वेद-शास्त्र नहीं। वह परमात्मा हर एक के घट के अंदर बसता है, आप उस परमात्मा की भक्ति करें। यहाँ न हिन्दुस्तानियों का सवाल है न अमेरिकनों का सवाल है। सब सन्तों ने कहा है और मैं भी यही कहता हूँ कि परमात्मा आपके घट के अंदर बैठा है, **परमात्मा सब सुखों का दाता है।**

आप परमात्मा को अपने घट में ढूंढें। इस संसार समुंद्र के न तो इस किनारे का पता है न उस किनारे का पता है न गहराई का पता है कि वह कितना गहरा है। आप इस समुंद्र को नाम के सहारे ही पार कर सकते हैं।

**सुखु दुखु जिह परसै नहीं लोभ मोह अभिमानु।**
**कहु नानक सुन रे मना सो मूरति भगवान।।**

हम दुख में दुखी हैं सुख में सुखी हैं अगर हम एक बार सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे शब्द के साथ जुड़ जाएं तो वहाँ न दुख है न सुख है। जो भक्ति करके वहाँ पहुँच जाते हैं वे जीते जी परमात्मा की मूर्त हैं, परमात्मा उनके अंदर बसता है। वे सिर्फ शरीर करके ही परमात्मा से अलग होते हैं, **परमात्मा सब सुखों का दाता है**। गुरु साहब कहते हैं:

*हर हर जन दोए एक है विभ विचार कुछ नाहे।*
*जल ते उपजे तरंग ज्यों जल ही बिखे समाहे।।*

गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं, ''पानी के ऊपर हवा पड़ती है तो बुलबुला बन जाता है, वह पहले भी पानी था जब बुलबुला बना तब भी पानी था जब हवा निकल गई तब भी पानी ही था।'' इसी तरह जिसने भक्ति की वह पहले भी शब्द में से आया था उसने फिर भी परमात्मा में ही मिल जाना है।

**उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि।**
**कहु नानक सुनु रे मना मुकति ताहि तै जानि।।**

वही मुक्त है जिसके लिए लोहा और सोना एक बराबर है; वैरी और मित्र एक समान है। यह सच है अगर हम परमात्मा की भक्ति करते हैं तो स्वाभाविक ही हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है। सिर्फ परमात्मा ही प्यारा है परमात्मा की भक्ति ही प्यारी है ऐसा कह लेना बहुत आसान है लेकिन ऐसा बनना बहुत मुश्किल है।

इतिहास गवाह है कि बड़े-बड़े महात्मा गरीबी में भी आए और अमीरी में भी आए। मेरा जातिय तजुर्बा है कि इनके ऊपर न

तो अमीरी का असर हुआ न गरीबी का ही असर हुआ। महात्मा रविदास, कबीर साहब, महात्मा जल्लण जट्ट गरीबी में आए। महात्मा जल्लण जट्ट ने मजदूरी करके अपना पेट पाला और संगत की मुफ्त सेवा की। शाह बल्ख बुखारा बादशाही को ठोकर मारकर बारह साल कबीर साहब का ताणा बुनता रहा।

आप प्यार से कहते हैं जब हम परमात्मा की भक्ति करते हैं तो हम यह नहीं चाहते कि कोई हमारी बड़ाई करे अगर कोई हमारी निन्दा करे तो हम उससे नाराज नहीं होते। अगर निन्दा करने वाले को यह पता हो तो वह क्यों किसी की मैल धोऐ?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''निन्दा करना सबसे बड़ा गुनाह है। आप जिसकी निन्दा करते हैं उसके ऐब आपके खाते में जमा होंगे और आपके गुण निन्दा करने वाले के खाते में जमा होंगे। पापी की निन्दा करना भी बुरा है अगर हम किसी कमाई वाले की निन्दा करते हैं तो हम किस नर्क में जाएंगे?''

**हरख सोग जा कै नहीं बैरी मीत समान।**
**कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जान।।**
**भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आनि।**
**कहु नानक सुन रे मना गिआनी ताहि बखानि।।**

ऐसे मालिक के भक्त न किसी को भय दिखाकर भक्ति में लगाते हैं न किसी से डरते हुए परमात्मा का संदेश रोकते हैं। परमात्मा ने उन्हें जो संदेश दिया है वे हमेशा ही दृढ़ विश्वास से अपने गुरु का संदेश घर-घर पहुँचाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

*राम बुलावा भेजया दिया कबीरा रोय।*
*जो सुख साधु संग है सो बैकुंठ न होय।।*

परमात्मा ने जब मुझे संदेश देकर दुनिया में भेजा तो मैंने वह संदेश बहुत मुश्किल से दिया। लोगों ने महात्माओं को किसी जगह आराम से बैठने नहीं दिया। कबीर साहब की गठरी बनाकर हाथी के आगे फैंक दिया और उन्हें कई किस्म के दुख दिए गए। हम गुरु तेग बहादुर साहब की बानी पढ़ रहे हैं, हम सब जानते हैं कि उस वक्त की हुकूमत ने आपके साथ अच्छा सुलूक नहीं किया। आपके मानने वाले नामलेवा शिष्यों को आरे से चिरवा दिया, उबलती हुई देग में बिठा दिया और गुरु तेग बहादुर साहब का चाँदनी चौक में तलवार से सिर काटकर शहीद कर दिया।

मैंने औरंगाबाद में औरंगजेब का मकबरा देखा है, कच्चा मकबरा है वहाँ कबूतरों की बीठों के ढ़ेर लगे हुए हैं कोई झाड़ू लगाने वाला भी नहीं। चाँदनी चौक में जहाँ गुरु तेग बहादुर साहब का सिर काटा था आज वहाँ लोग पैर धोकर माथा टेकते हैं सारा दिन प्रशाद चढ़ाते हैं। उस समय की हुकूमत यह कहती थी कि यह ठीक नहीं हम ठीक हैं। आप सोचकर देखें! अगर हम परमात्मा की भक्ति करेंगे तो उसकी खुशबू को कोई नहीं रोक सकता।

***भक्ति करे पाताल में ते प्रकट होय आकाश।***

मैं बताया करता हूँ कि मुझे काफी साल यहाँ भी गुफा में बैठने का मौका मिला। मैं उन दिनों में शाम को आठ बजे से नौं बजे तक सिर्फ एक घंटे के लिए ही बाहर निकलता था। महाराज जी ने कहा था, ''बेटा! तेरे अंदर से महक आएगी, वह महक समुंद्र पार कर जाएगी।'' हम लोग बहुत परेशान हो जाते हैं कि बंदे में से महक आएगी! कुछ लोगों ने कहा कि महाराज जी को काम लेना आता है इनसे कोई काम लेना है। महाराज जी ने कहा, ''यह सावन दरबार है इसे अमेरिकन लोग जहाजों में चढ़ाएंगे।'' जब मैं

हवाई जहाज में रोम के ऊपर से उड़ रहा था उन्होंने बताया कि हम 42 हजार फुट की ऊँचाई पर उड़ रहे हैं। तब मुझे यह तुक याद आईः

*भक्ति करे पाताल में प्रकट होय आकाश।*

आप पाताल में बैठकर भक्ति करें तो भक्ति की गूँज आकाश में हो जाएगी। कबीर साहब कहते हैंः

*गुरु को राखे शीश पर चल्ले आज्ञा माहे।*
*कहे कबीर तह दास को तीन लोक डर नाहे।।*

जब मैं पहले टूर पर विश्व में जाने लगा तब कुछ प्रेमियों ने मुझे हमदर्दी से समझाया कि आप खुद भी उन लोगों की जुबान नहीं जानते और आपके साथ एक छोटा सा बच्चा है आपको मुश्किल आएगी, आप अपने साथ कोई स्याना आदमी ले लें। मैंने हँसकर उनसे कहा, ''यह मेरे बस का खेल नहीं यह अंदर वाले को ही पता है, जो भेज रहा है यह सब कुछ उसके बस में है।''

मैं सारे विश्व में एक छोटे से बच्चे को लेकर अपने गुरु का संदेश दे आया कि मेरा अपना कोई मिशन नहीं न ही मैं कोई मिशन चलाने आया हूँ। मुझे महाराज सावन-कृपाल के चरणों में बैठकर जो कुछ मिला है वह मैं आपके साथ बाँटने के लिए आया हूँ। कोई ऐसी पहाड़ी नहीं, कोई ऐसी समुंद्र की तह नहीं जहाँ उन परमात्मा के प्यारो का नाम नहीं गूँजा। आप रोज जो भजन बोलते हैं ये भजन हर अंग्रेज की जुबान पर चढ़े हुए हैं।

आप गुरु का हुक्म मानकर गुरु की आज्ञा का पालन करके देख लें! चाहे आप त्रिलोकी में चले जाएं ऐसे महात्मा न किसी को भय देते हैं और न भय दिखाकर भक्ति का संदेश रोकते हैं। जब सूरज चढ़ता है चाहे हम उसे थाली के नीचे रख दें तो हम उसका प्रकाश गुम नहीं कर सकते, सूरज प्रकाश करता है।

**जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग।**
**कहु नानक सुन रे मना तिह नर माथै भाग।।**

उनके ऊँचे भाग्य हैं जिन्होंने विषय-विकारों को लात मारकर दुनिया की ऐश-ईश्रतों को छोड़कर अपने अंदर उस मालिक का इश्क पैदा कर लिया। उनके ऊँचे भाग्य थे जिन्हें परमात्मा ने अपनी भक्ति के लिए चुना, **परमात्मा सब सुखों का दाता है**।

**जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदास।**
**कहु नानक सुन रे मना तिहि घटि ब्रहम निवासु।।**

जिसने दुनिया की लज्जतें छोड़कर परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा के साथ मिलाप कर लिया उसके अंदर चौबिस घंटे परमात्मा निवास करता है, प्रकट हो जाता है।

**जिहि प्रानी हउमै तजी करता राम पछान।**
**कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मान।।**

गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं, ''हमारे और परमात्मा के दरम्यान हौमें ही रूकावट है। हौमें क्या है? मैं आलम हूँ, मैं फाजल हूँ, मैं धनी हूँ मेरे जैसा कौन है? हौमें ही सबसे बड़ा रोग है।''

*हौमें दीर्घ रोग है दारु भी इस माहे।*
*कृपा करे जे आपणी ते गुरु का शब्द कमाहे।।*

हौमें मीठी तपेदिक है अगर परमात्मा दया-मेहर करके शब्द का दान दे तो हम इस रोग से बच सकते हैं, यह बड़ा भयानक रोग है।

**भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नाम।**
**निस दिन जो नानक भजै सफल होहि तिह काम।।**

गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं, ''इस जिंदगी में कौन सफल होते हैं? कलयुग में मुक्ति का उपाय सिर्फ परमात्मा का सच्चा नाम है। यह नाम लिखने-पढ़ने और बोलने में नहीं आता, यह बिना लिखा कानून, बिना बोली भाषा है।'' पल्टू साहब कहते हैंः

*जे कोई चाहे नाम तो नाम अनाम है।*
*पढ़न लिखन में नाहीं नेह अक्षर काम है।*
*रूप कहो अनूरूप पवन अनिरेख ते।*
*हां रे गैब दृष्टि ते सन्त नाम ओह पेखते।।*

परमात्मा ने संसार में सन्तों को भंडारी बनाकर भेजा है। सारे ही समाज कहते हैं कि मुक्ति नाम में है लेकिन कभी ठंडे दिल से यह नहीं विचारा कि नाम लफ्ज है या ताकत है? नाम वह ताकत है जिसने दुनिया की रचना पैदा की है जिसके आधार पर सारे खंड-ब्रह्मांड खड़े हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

*जिस वक्खर को लैण तू आया, राम नाम सन्तन घर पाया।*
*तज अभिमान लेहो मन मोल, राम नाम हृदय में तोल।*
*नौं निध अमृत प्रभ का नाम, देही में उसका विश्राम।।*

प्यारेयो! वह नाम आपकी देह और वजूद के अंदर है। सन्त-महात्माओं ने हमें उस नाम के साथ जोड़ना है।

**जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नाम।**
**कहु नानक सुन रे मना परहि न जम कै धाम।।**

सन्त हमें जो सिमरन देते हैं पहले हम वह सिमरन जुबान के साथ करते हैं, जब जुबान का सिमरन पक जाता है तो मन की जुबान से सिमरन होता है। जब मन की जुबान से सिमरन पक जाता है तो आत्मा अंदर से सिमरन करती है फिर यमों के वश नहीं होते। कबीर साहब कहते हैंः

*जाप मरे अजपा मरे अनहद भी मर जाए।*
*सुरत समानी शब्द को ताको काल न खाए।।*

वह धुन सच्चखंड से उठकर चौबिस घंटे हर एक के अंदर आ रही है, आँखों के पीछे धुनकारे दे रही है। कबीर साहब कहते हैंः

*मुल्ला मनारे क्या चढ़े साईं न बहरा होय।*
*जां कारण तू बांग दे दिल ही भीतर जोय।।*

परमात्मा बहरा नहीं जिसे आप ऊँची बांग देकर सुना रहे हैं, वह बांग तो आपने अंदर से सुननी है। गर्म ख्याली लोगों ने महाराज सावन के आश्रम के आगे अपना धर्म स्थान बना लिया, वे बाजे बजाते। महाराज जी हँसकर कहते, ''रब को जगाने वाले आ गए।''

*कोई गावे रागी नादी बेदी बहो भेद करनी हर हर भीजे।*

चाहे कोई राग करके गा ले चाहे किसी भी तरीके से गा ले। हम राग या बाजे दो घंटे, चार घंटे या आठ घंटे बजाएंगे। बाजे की सुर खराब हो जाएगी, बाजा टूट जाएगा या बाजा बजाने वाले थक जाएंगे लेकिन हमने जिस शब्द को सुनना है वह शब्द जन्म से लेकर मरण तक बंद नहीं होता।

महात्मा हमें किताबों में से पढ़कर सिमरन नहीं देते, सिमरन उनका कमाया होता है उस सिमरन के पीछे उनका तप-त्याग काम करता है। जो धुन सचखंड से आ रही है उसे कानों से सुनना है, वह हमारे माथे में से आ रही है लेकिन जन्मों-जन्मों से हमारी आदत की वजह से हमें ऐसा लगता है कि यह धुन बाहर से आ रही है, यही मुक्ति का साधन है।

जब गुरु नानकदेव जी शेख बरम से मिले तो शेख बरम ने सवाल किया, ''महाराज जी! पूरे सन्त की क्या निशानी है?'' तब गुरु नानकदेव जी ने यह शब्द उचाराः

*घर में घर दिखाए दे सो सतगुरु पुरख सुजान।*
*पंच शब्द धुनकार धुन ते बाजे शब्द निशान।।*

महाराज सावन सिंह जी से भी कहा गया कि आप कोई निशानी रखें। महाराज सावन ने कहा, ''क्या हम कोई बोर्ड लगाएं?'' सन्तों की निशानी सन्तों के सेवकों से पता लगती है, जिनकी सन्त संभाल करते हैं; यही सन्तों की बड़ी करामात है।

सन्त कौन है? जो उस घर का रास्ता बता दे, उस रास्ते पर डाल दे कि इस शरीर के अंदर परमात्मा का घर है। वह सन्त चाहे हिन्दु है चाहे मुसलमान है चाहे ईसाई है चाहे किसी भी जाति का है, हमने उसके साथ कोई रिश्ता-नाता नहीं करना उसके साथ खाना नहीं खाना हमने तो उससे रास्ता लेना है। उसका निशान यह है कि वह 'पांच शब्द' का रास्ता बताए।

महात्मा जिस समय नामदान देते हैं वे उस समय उन पाँच रोशनियों के बारे समझा देते हैं कि सबके अंदर परमात्मा ने प्रकाश और अपनी आवाज रखी है। जो सन्तों का दिया हुआ सिमरन करता है रोज-रोज उस शब्द को सुनता है वह यमों के बस नहीं होगा। अगर यमों के बस ही होना है तो ऐसे गुरु को, ऐसे नाम को दूर से ही सलाम। अगर शिष्य नाम लेकर ठग्गियां, बेईमानियां, चोरियां करता है तो गुरु ने उससे कौन सा कर्ज लिया है कि गुरु उसकी संभाल करे और वह बिल्कुल ही न सुधरे। हमने नाम लिया है हम सतसंग सुनते हैं तो हमारी भी जिम्मेवारी है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''शिष्य के ऊपर इतनी ही जिम्मेवारी डाली गई है कि शराब नहीं पीनी, मीट नहीं खाना, बुरा कर्म नहीं करना और अपने दस नाखूनों से मेहनत करके कमाया हुआ अन्न-पानी खाना है फिर गुरु क्यों नहीं आता? गुरु कभी भी अपनी ड्यूटी से पीछे नहीं हटता।''

**जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार।**
**कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार।।**

अब गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं, ''जो इस दुनिया की मान-बड़ाई ममता को छोड़कर भजन-सिमरन करता है वह खुद तर जाता है अपने यारों-दोस्तों और संबधियों को भी तार लेता है।''

**जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि।**
**इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान।।**

गुरु तेग बहादुर साहब ने इस संसार की तुलना एक स्वपन के साथ की है कि रात को स्वपन आता है तो वह सच प्रतीत होता है लेकिन जब उठते हैं तो सच्चाई कुछ भी नहीं। इसी तरह कोई बीस कोई तीस कोई चालीस तो कोई सौ साल काटकर चला जाता है। जब अंत समय आता है तो पछताते हैं। इनमे से अगर कोई सच है तो वह परमात्मा है; **परमात्मा सब सुखों का दाता है।**

**निस दिन माइआ कारने प्रानी डोलत नीत।**
**कोटन मैं नानक कोऊ नाराइन जिह चीत।।**

हम माया के लिए जगह-जगह भागते फिरते हैं कि कहीं से कुछ न कुछ मिल जाए। महाराज सावन सिंह जी बहुत हसँकर मिसाल दिया करते थे अगर कोई हमें यह कह दे कि अमेरिका में जायदादें मुफ्त मिलती हैं तो हम सब कुछ छोड़कर वहाँ भाग जाएंगे। अगर यह कहें कि अंदर बैठकर भक्ति करो तो हम कहते हैं कि मन नहीं लगता भक्ति करने वाला करोड़ों में कोई एक ही है।

*जग में उत्तम कहिए विरले केई के।*

**जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत।**
**जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत।।**

**प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंध।**
**कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध।।**

संसार पानी के बुलबुले की तरह है हवा पड़ी बुलबुला बन गया हवा निकल गई फिर पानी बन गया। इसी तरह हमारी जिंदगी भी पानी के बुलबुले की तरह है पता नहीं किस समय साँस रूक जाना है। मन माया में रम गया है इसमें से निकलना बहुत मुश्किल है अगर इंसानी जामा पाकर भक्ति करें तो यमों के फंद क्यों पड़ें? आज यमों के फंद पड़े हैं तो ही हम दुखी दुनिया में बैठे हैं।

**जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह।**
**कहु नानक सुन रे मना दुरलभ मानुख देह।।**

अगर सदा शान्ति चाहते हैं तो परमात्मा की शरण लें, इंसान का जामा दुर्लभ है हम इसमें बैठकर ही भक्ति कर सकते हैं।

**माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान।**
**कहु नानक बिनु हरि भजनि बिरथा जनमु सिरान।।**
**जो प्रानी निसि दिनि भजे रूप राम तिह जानु।**
**हरि जनि हरि अंतरु नहीं नानक साची मानु।।**

गुरु तेगबहादुर साहब कहते हैं, ''हम कितने मूर्ख हैं कि हम माया के पदार्थों के पीछे दिन-रात तड़पते फिरते हैं हमारा मन परमात्मा की भक्ति की तरफ नहीं आता। जिन्होंने उठते-बैठते, सोते-जागते भजन को ही अपना मामूल बना लिया है उनके और परमात्मा के बीच कोई फर्क नहीं। वे परमात्मा के साथ प्यार लगाकर परमात्मा में ही मिल गए हैं वे और परमात्मा एक है।''

गुरु तेगबहादुर साहब ने हमें इन श्लोको में अपना जातिय तजुर्बा बताया है अगर हम सिमरन करेंगे शब्द की आवाज को

सुनेंगे जो आवाज मालिक की दरगाह से आ रही है तो हमें परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं। सच्ची चीज परमात्मा का नाम है, नाम लेकर हमें दिन-रात कमाई करनी चाहिए।

आप प्यार से कहते हैं कि जब मौत आती है तब माता-पिता, बहन-भाई कोई भी हमारी मदद नहीं करता। उस समय वह एक परिपूर्ण परमात्मा जिसने हमें नाम दिया है वही हमारी मदद करता है। फिर क्यों न हम भक्ति करके जीते जी परमात्मा में मिल जाएं! महात्मा का यह मतलब नहीं कि हमें कर्मों के मुताबिक जो जिम्मेवारियां मिली हैं इन्हें छोड़कर हम घरों से दौड़ जाएं; हमने दुनिया की जिम्मेवारियां निभाते हुए परमात्मा की भक्ति करनी है। हमें आखिरी सफर को अपनी आँखों के आगे रखना चाहिए।

आप ठंडे दिल से सोचें! अगर हमने यहाँ से कुछ दूर जाना है तो हम सबसे पहले उस सफर की तैयारी करते हैं कि हम कहाँ आराम करेंगे, खाने का क्या इंतजाम होगा, किराए के लिए कितने पैसे चाहिए और रास्ते के लिए क्या सामान चाहिए? जब हम दुनिया के सफर की इतनी चिंता-फिक्र करते हैं इंतजाम करते हैं तो हमने मौत का जो आखिरी सफर करना है कभी उसकी भी तैयारी की है कि हम कौन सी वस्तु साथ लेकर जाएंगे? वहाँ कौन हमारी मदद करेगा हमें किस चीज की जरूरत है?

आज तक हमने अपने बड़े बुजुर्गों को यहाँ से जाते हुए देखा है कि जिन चीजों के साथ उनका इतना प्यार इतना लगाव था वे सब कुछ यहीं पर छोड़कर चले गए उन चीजों में से किसी ने भी उनकी मदद नहीं की तो हम कौन सी आशा लगाकर बैठे हैं? हमें भी चाहिए कि सतगुरु की बानी से फायदा उठाकर शब्द-नाम की कमाई करें और अपने जीवन को सफल बनाएं। *** 1 जनवरी 1995

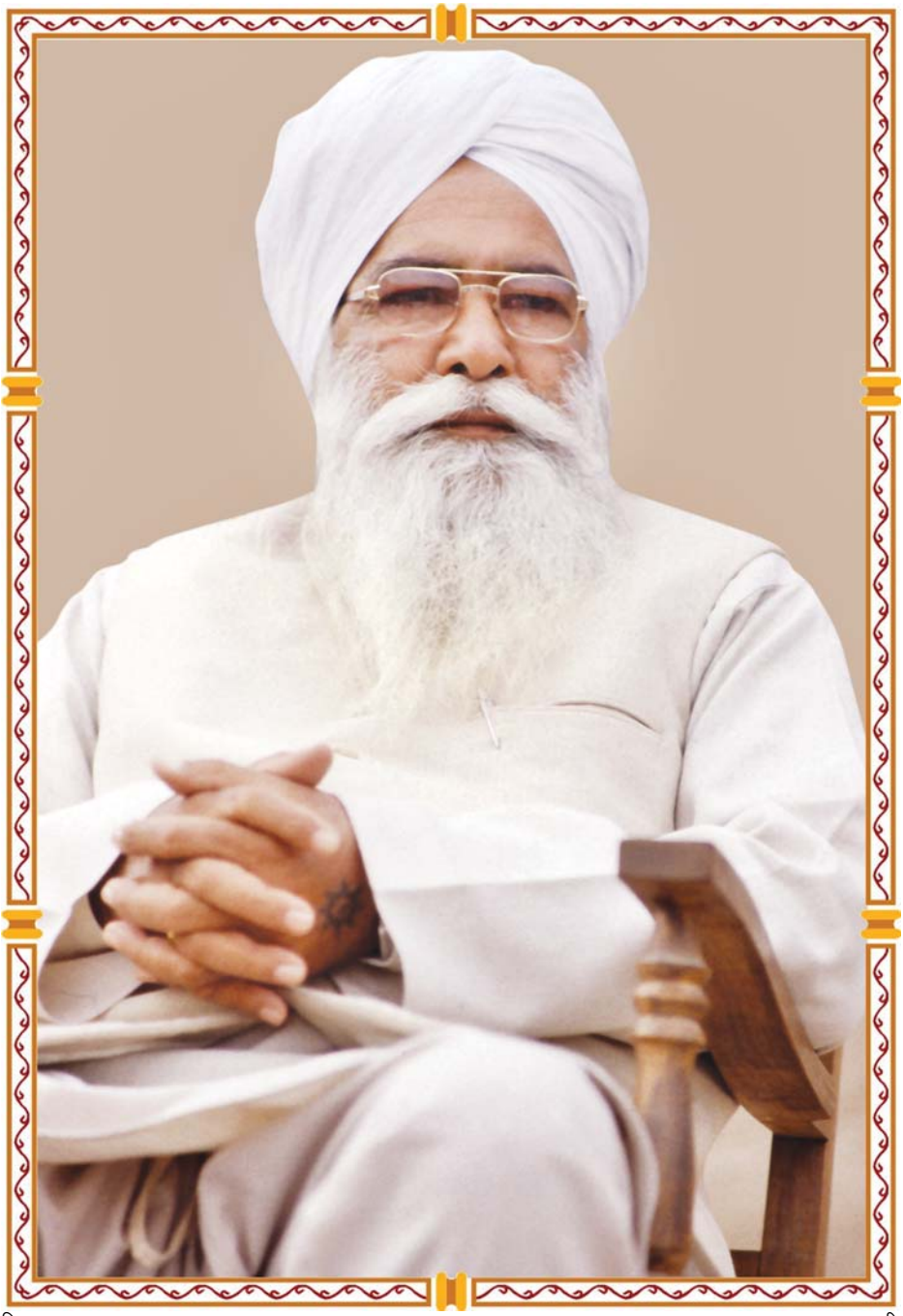

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अभ्यास में बिठाने से पहले संदेश

# परमात्मा हमसे दूर नहीं

16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

परम पिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर अपार दया करके हमें भक्ति करने का मौका दिया है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब तक हमारी आँखें बंद हैं हम तब तक ही कहते हैं कि हम सतसंग में जाते हैं, जब आँखें खुल जाती हैं फिर पता लगता है कि कोई हमें सतसंग में बुला रहा है अपनी तरफ खींच रहा है।''

हम जब भजन करते हैं अंदर जाकर उस सच्चाई को देखते हैं फिर पता लगता है कि पहले गुरु ही सेवक के अंदर प्यार का पौधा लगाता है। गुरु उस पौधे को पानी देकर हरा-भरा करता है। वही हमें अंदर से 'नाम' जपने की प्रेरणा देता है; **परमात्मा हमसे दूर नहीं**। गुरु नानकदेव जी अपनी बानी में लिखते हैं:

*आपे संगत सद बहाले आपे विदा करावे।*

वह खुद ही संगत को बुलाता है और विदा करता है। वह खुद ही बर्तन परोसता है, खुद ही खाता है; खुद ही आशीष देता है कि भंडारा भरपूर रहे लेकिन हम इस रचना को तभी देख सकते हैं जब परमात्मा हम पर दया-मेहर करता है। उसने हम पर अपार दया करके अपनी भक्ति का दान दिया है। अब हम भजन-अभ्यास में बैठ रहे हैं यह उनकी ही दया है, इन्सान की ताकत नहीं कि वह भक्ति कर सके।

आज इतने फैलाव का युग है कि जागते हुए तो हम दुनिया के काम करते ही हैं सोए हुए भी दुनिया के कारोबार में लगे रहते हैं। हर इन्सान मारो-मार करता फिर रहा है। जो इस युग में भक्ति करते हैं उनके लिए गुरु नानक साहब इस तरह कहते हैं:

*हौं बलिहारी ताकें जाऊँ, कलयुग में जिन पाया नाम।*

आप कहते हैं, ''जिन्होंने कलयुग में 'नाम' और गुरु की शरण प्राप्त कर ली, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ।''

गुरु साहिबानों के जमाने में योगी लोगों का और कर्मकांड का बहुत जोर था। आज से लगभग 50-60 साल पहले मैंने खुद देखा है कि आमतौर पर साधु खेतों में तप किया करते थे, कुछ साधु उल्टे लटककर भी मालिक की साधना करते थे लेकिन पूर्ण गुरु न मिलने के कारण ही ऐसे लोग शरीर को कष्ट देते रहे। आपको अभी भी नाभा स्टेट (पंजाब) में ऐसे साधुओं की निशानियाँ मिल जाएंगी।

महात्माओं ने बानियाँ हमें डराने के लिए नहीं लिखी। जिन महात्माओं की आँखें खुली हैं वे हमें चेतावनी देते हैं कि किस तरह जीव को यम-मार्ग से जाना पड़ता है। गुरु महाराज कहते हैं:

*हर हर नाम जपेन्दियां, कछु न कहे यम काल।*
*नानक मन तन सुखी होय, अन्ते मिले गोपाल॥*

यम से बचने का एक ही साधन 'नाम' है। 'नाम' प्रभु की ताकत है और कण-कण में व्यापक है। 'नाम' के आधार पर खंड-ब्रह्मांड चल रहे हैं। 'नाम' के साथ जुड़ने पर मन को और विषय-विकारों से जल रहे तन को भी शान्ति आ जाती है। **परमात्मा हमसे दूर नहीं**, वह हमारे अंदर ज्योत रूप नाद रूप में विराजमान है। जब हम अपने अंदर परमात्मा के लिए जगह बना लेते हैं तो परमात्मा हमें दर्शन जरूर देता है।

प्यारेयो! हमें बहुत अच्छा समय मिला है। रोज की तरह आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरू करें। जिन प्रेमियों को 'नाम' नहीं मिला वे भी इधर-उधर न घूमें, सतगुरु-सतगुरु कहने में ही उनका फायदा है। आँखें बंद करके दोनों आँखों के बीच तीसरे तिल पर अपने ध्यान को एकाग्र करें, सिमरन करें।

25. 11.1995

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

# निन्दा

एक बादशाह की कोई औलाद नहीं थी। किसी ने उससे कहा कि तू यज्ञ कर तभी औलाद हो सकती है। बादशाह ने यज्ञ किया यज्ञ में बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों को खाना खिलाया गया। मालिक की मौज उस खाने में साँप ने जहर घोल दिया, जिन लोगों ने पहले खाना खाया वे सभी मर गए।

बादशाह को बहुत दुख हुआ कि मैंने यज्ञ तो अपने भले के लिए किया था लेकिन इसमें बहुत से अच्छे लोग मर गए, मेरा पाप कैसे कटेगा? उसने उदास होकर सोचा! इससे तो अच्छा है कि मैं इस राज्य को छोड़कर जंगल में जाकर भक्ति करूं। बादशाह अपना राजपाठ छोड़कर बाहर चला गया। वहाँ जाकर बादशाह ने पूछा कि कोई ऐसा घर है जहाँ मैं रात काट सकूँ? वहाँ एक विधवा औरत रहती थी, पड़ोस वाले उस औरत से बहुत नफरत करते थे। पड़ोसियों ने बादशाह से कहा, ''तू उस औरत के यहाँ रात काट सकता है।'' पड़ोसियों का विचार था अगर यह वहाँ रात गुजारेगा तो हम उस औरत की निन्दा करेंगे।

बादशाह नौजवान और सुंदर था। उसने औरत के घर जाकर कहा, ''माता! मुझे रात काटनी है।'' वह औरत गरीब थी हर कोई उसकी निन्दा करता था। औरत ने कहा, ''भाई! तू बैठ जा मेरे घर में जैसा भी है मैं तुझे खाने के लिए दूंगी।'' जब रात कट गई तो लोग बातें बनाने लगे और उस औरत की निन्दा करने लगे कि यह बदमाश औरत है, इसने एक जवान आदमी को अपने घर में रखा। बादशाह के ऊपर जो श्राप था वह सारा श्राप उन निन्दा करने वालों ने अपने ऊपर ले लिया।

भगवान का भेजा हुआ दूत बादशाह के पास आकर कहने लगा, ''देख बादशाह! तेरा पाप इन लोगों ने ले लिया है। अब भगवान का हुक्म है कि तू जल्दी से जल्दी इस औरत को लेकर यहाँ से निकल जा क्योंकि यहाँ निन्दक ही निन्दक हैं, इन पापियों को इसी जगह सजा दी जाएगी।''

बादशाह ने उस औरत से कहा, ''माता! अगर तू विश्वास करे तो मैं तुझे सच बताऊं। मैंने औलाद पाने के लिए यज्ञ किया उसमें साँप ने जहर घोल दिया, खाना खाने से कई ऋषि–मुनि मर गए। मैंने प्रायश्चित करने के लिए राजपाठ छोड़ दिया और सोचा भगवान की भक्ति करने से मेरे पाप की मुक्ति हो जाएगी। जब मैं यहाँ आया तो यहाँ के लोगों ने मजाक बनाने के लिए मुझे तेरे घर भेज दिया। तूने मुझे अपना बेटा समझा मेरी मेहमान–नवाजी की, मेरे दिल में तेरी बहुत इज्जत है।''

जब इन लोगों ने निन्दा की तो भगवान की कचहरी में इन्हें पाप मिला। अब दूत मुझसे कह रहे हैं कि तू इस औरत को यहाँ से ले जा इस गाँव में आग लगने वाली है अगर तू मुझ पर विश्वास करती है तो मेरे साथ चल। औरत ने कहा, ''भाई! मुझे यहाँ के लोग सुखी नहीं रहने देते, मैं तेरे साथ चलती हूँ।'' जब औरत बादशाह के साथ चली गई तो उन लोगों ने रही–सही कसर भी पूरी कर दी कि वह बदमाश आदमी था औरत को लेकर भाग गया। तभी उस गाँव में आग लग गई। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

***सौ पापी दा फेड़या निन्दक दे सिर भार।***

कानून सबके लिए एक जैसा है कभी कोई यह सोचे कि हम सतसंगी हैं जिसकी चाहे निन्दा करें बल्कि जानकार को ज्यादा और अंजान को कम सजा मिलती है। सतसंगी को अगर निन्दा करनी है तो अपने मन की करे और बड़ाई अपने सतगुरु की करे।

***

**16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम:**

07 से 11 सितम्बर 2018
05 से 07 अक्टूबर 2018
02 से 04 नवम्बर 2018
30 नवम्बर और 01 व 02 दिसम्बर 2018

# धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की अपार दया से AJAIBBANI अजायब बानी नाम की एक एप्लीकेशन बनाई गई है। आप इस एप्लीकेशन को प्लेस्टोर में जाकर अपने एंड्राएड फोन पर डाउनलोड कर सकते हैं।

इस एप्लीकेशन AJAIBBANI की बाईं तरफ ऊपरी कोने में मेन्यू बटन का इस्तेमाल करके आप बाबा जी के आडियो-वीडियो सतसंग, सवाल-जवाब को प्ले करके देख व सुन सकते हैं और डाउनलोड भी कर सकते हैं। इस एप्लीकेशन में अजायब बानी हिन्दी और मराठी की मासिक पत्रिका व अन्य प्रकाशित पुस्तकें *खुशियों का खजाना*, *परमात्मा के रंग*, *प्यार का सागर*, *अमृतवेला*, *भजन माला-2010* और बाबा जी की फोटोज भी हैं।

आशा करते हैं कि आप सतगुरु की मधुर याद में बनाई गई इस एप्लीकेशन को डाउनलोड करके लाभ उठाएंगे।

***